ISSN 2277-1972
RNI-MPHIN/2008/25439

मई - जून 2023

समय के साखी

प्रगतिशील साहित्यिक पत्रिका

2000 के बाद की युवा कविता

मूल्य : 100/-

2000 के बाद की युवा कविता

देखो तो अब भी कितनी चुस्त दुरूस्त और पुरअसर है
हमारी सदी की नफ़रत
किस आसानी से चूर-चूर कर देती है
बड़ी से बड़ी रूकावटों को !
किस फुर्ती से झपटकर हमें दबोच लेती है !
वह दूसरे जज़्बों से कितनी अलग है
एक साथ ही बूढ़ी भी और जवान भी
यह खुद उन कारणों को जन्म देती है
जिनसे पैदा हुई थी !

विस्वाव शिंबोर्स्का
नफ़रत: काव्यांश: अनुवाद: विजय अहलूवालिया

परामर्श
रामप्रकाश त्रिपाठी
सेवाराम त्रिपाठी

आवरण
मुकेश बिजौले

राजेश जोशी
अतिथि संपादक

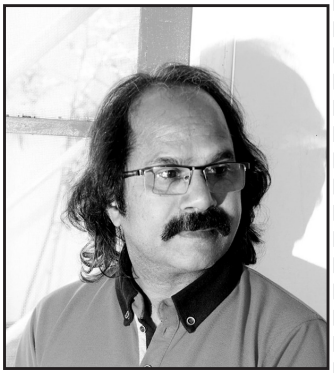

1 जनवरी 1964 को अशोकनगर मध्य प्रदेश में जन्मे मुकेश बिजौले चित्रकला की दुनिया में प्रतिष्ठित और सम्मानित नाम हैं। मुकेश बिजौले के चित्रों के बारे में बकौल हरिओम राजोरिया- 'मनुष्य के दुख, सपने, पेड़- पौधे, पशु- पक्षी, पहाड़, जंगल, मेला- हाट, टेढ़े-मेढ़े रास्ते और आपसी रिश्तों में प्रेम की ऊष्मा अपने आदिम स्वरूप में दिखाई देती है। एक ऐसा संसार जो अपने जीवन संघर्ष के रंगों से परिपूर्ण है। इस संसार की अनेक छवियाँ इन चित्रों में हम देख पाते हैं। जहाँ जीवन अपने स्वाभाविक और प्राकृतिक रंगों में विद्यमान है।'

मुकेश बिजौले के चित्र राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में प्रदर्शित होते रहते हैं। साथ ही कई महत्वपूर्ण सम्मानों से भी सम्मानित हैं।

मोबाइल - 9826635625

समय के साखी

अप्रैल-मई 2023

संपादकीय कार्यालय : 912, अन्नपूर्णा कॉम्पलेक्स, पी.एण्ड.टी चौराहा के पास, भोपाल-3 (म.प्र.) 462003

मो. : 09713035330, फ़ोन : 0755-4030221

e-mail : samaysakhi@gmail.com

website - www.samaykesakhi.in

आकल्पन : गणेश ग्राफिक्स, भोपाल

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी आरती द्वारा **गणेश ग्राफ़िक्स,** देशबंधु भवन, प्रथमतल, 26 बी, प्रेस काम्प्लेक्स, एम. पी. नगर जोन-1 , भोपाल से मुद्रित कराकर 912, अन्नपूर्णा कॉम्पलेक्स, पी.एण्ड.टी चौराहा के पास, भोपाल-3 (म.प्र.) से प्रकाशित।

यह अंक Notnull.com पर उपलब्ध है

यह अंक 100/- (डाक खर्च 30/- अतिरिक्त)

आजीवन : ₹ 2000/-

यह अंक : ₹ 100/-

संस्थाओ के लिए यह अंक ₹ 150/- (डाक खर्च 30/- अतिरिक्त)

समस्त भुगतान मनीआर्डर/चैक/बैंक ड्रॉफ्ट **'समय के साखी'** के नाम स्वीकार्य होंगे। खाता क्रं. 451702011003868, IFSC Code UBINO545171 'समय के साखी' नामे, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, शाखा- अरेरा कॉलोनी, भोपाल में भी जमा कर सकते हैं।

नोट : किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र, भोपाल (म.प्र.) होगा।

सर्वाधिकार सुरक्षित - संपादक/प्रकाशक

क्रम

संपादकीय

जैसे समय कभी नहीं होता घड़ी के भीतर

खंड-एक

कविताएँ : अनुज लुगुन, कमल जीत चौधरी, अनुपम सिंह, विश्वासी एक्का, देवेश पथ सारिया, अरबाज़ खान, रजनी अनुरागी, सोहनलाल, संध्या कुलकर्णी, प्रिया वर्मा

आलेख : बसंत त्रिपाठी : संवेदनात्मक विविधता के स्वर

खंड-दो

कविताएँ : अनुराधा सिंह, श्रुति कुशवाहा, वीरेंद्र भाटिया, निदा नवाज़, जमुना बीनी, नीलोत्पल, आत्मारंजन, प्रतिभा गोटीवाले, अभिषेक अंशु, नेहल शाह

आलेख : शांति नायर : प्रत्याशा से भरी प्रतिध्रुव कविताएँ

खंड-तीन

कविताएँ : अच्युतानंद मिश्र, फ़िरोज़ खान, वंदना चौबे, नेहा नरूका, गौरव पाण्डेय, अर्चना लार्क, कविता कर्मकार, हेमंत देवलेकर, मानस भारद्वाज, सपना भट्ट

आलेख : अनिल त्रिपाठी : संकट के बावजूद : आश्वासन के रंग

खंड-चार

कविताएँ : विहाग वैभव, निशांत, अरुणाभ सौरभ, रूपम मिश्र, ज्योति रीता, पार्वती तिर्की, सौम्य मालवीय, कुमार मंगलम, आरती

आलेख : डॉ. प्रियदर्शिनी : इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता और कवि

बातचीत

चीज़ों को नया करो, नया करने में ही सारी चुनौती है :
विजय कुमार, सविता सिंह, कुमार अंबुज, असंगघोष और राजेश जोशी
संचालन- संजीव कौशल

नफ़रतों का ज़हर सारी बस्तियों में घुल गया
प्यार के किस्से किताबों में ही लिखे रह गये ।

-फ़ज़ल ताबिश

संपादकीय

जैसे समय कभी नहीं होता घड़ी के भीतर

किसी भी रचना समय की निर्मिति उस समय में सक्रिय सभी पीढ़ियों के रचनाकारों के रचनाकर्म से होती है लेकिन समय और समाज के भीतर आने वाले बदलावों और उनके साथ रचना के स्वभाव और रचाव में होने वाले बदलावों को जानने के लिये हमेशा ही उसी रचना समय में आये नये रचनाकारों की रचना को देखना और समझना जरूरी होता है। इक्कीसवीं सदी एक सीधा सरल पद नहीं है। एक धारणा यह भी है कि बीसवीं सदी की महान रूसी क्रांति से बने समाज के विखंडन और नयी तकनीकी के साथ लगभग 1985 से 1990 के बीच बीसवीं सदी का अंत हो गया और इक्कीसवीं सदी का प्रारंभ हुआ। हाब्सबाम ने इसीलिये बीसवीं सदी को एक शार्ट सैन्चुरी कहा है। केलेण्डर के अनुसार समय का अंकन करने वाले मानते हैं कि 2000 की सुबह के साथ ही इक्कीसवीं सदी की शुरूआत हुई। कुछ युवा रचनाकार यह भी महसूस करते हैं कि 2010 के आसपास तकनीकी में ऐसे परिवर्तन आये हैं कि यह मानना चाहिये कि वास्तव में इक्कीसवीं सदी की शुरूआत इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में हुई।

समय और रचना के संबंधों के इस विविधवर्णी संसार के बीच ही हमें नई रचना के प्रस्थान की तलाश के लिये कोई सीमा रेखा खींचनी थी। हमने 2000 की सीमा को इसलिये नहीं चुना कि यह अन्य अवधारणाओं के बीच कोई सबसे विश्वसनीय सीमा हो सकती है। लेकिन कोई एक तारीख तय करना ज़रूरी था और तीनों अवधारणाओं के बीच शायद 2000 कहीं अन्य अवधारणाओं के केंद्र में था। सृजनकर्म में यूँ भी ऐसी कोई तारीख़ नहीं हो सकती जिसे रचना में आये